धार्मिक/आध्यात्मिक ज्ञान-बोध

(विचारक/संकलक)
प्रशान्त अग्रवाल
सहायक अध्यापक
प्राथमिक विद्यालय डहिया
विकास क्षेत्र : फतेहगंज पश्चिमी
जनपद : बरेली

धार्मिक/आध्यात्मिक ज्ञान-बोध

'अनुक्रमणिका'

1. रामायण में अनुकरणीय
2. महाभारत के सबक
3. बुद्ध
4. गूढ़ मार्मिक प्रसंग (चार)
5. मार्मिक बात (कृष्ण के नियम)
6. मार्मिक प्रसंग (भावुक गीतापाठी)
7. मार्मिक प्रसंग (अशोक वाटिका)
8. क्यों?
9. भोजन-विज्ञान
10. तिथि अनुसार पर्व/दिवस
11. गीता में भगवान् की विभूतियाँ
12. नामों के निहितार्थ
13. भगवान् के नाम
14. धर्म पर आसुरी छाया

रामायण में अनुकरणीय

विचारक : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली

- **वशिष्ठ** : स्थिर मति
- **राम** : मर्यादा और शील
- **अगस्त्य** : परोपकारी वृत्ति
- **मेघनाद** : मृत्यु से निर्भयता
- **त्रिजटा** : दुखीजन को सांत्वना
- **भरत** : त्यागपूर्वक कर्त्तव्यपालन
- **सीता** : पातिव्रत्य और स्वाभिमान
- **शबरी** : अडिग विश्वास, अटूट धैर्य
- **अंगद** : स्वामी-स्वाभिमान की रक्षा
- **वाल्मीकि** : करुणा और शांत-चित्त
- **हनुमान** : आदर्श सेवा, अनन्य भक्ति
- **लक्ष्मण** : बड़े भाई की निष्काम सेवा
- **लव-कुश** : वीरता-विनय का समन्वय
- **उर्मिला** : पति-वियोग में पति-सहयोग
- **जनक** : स्वार्थ से ऊपर व्यापक चिंतन
- **दशरथ** : वियोग में प्रतिपल प्रभु-ध्यान
- **केवट** : संसार से तारने वाली सौदेबाजी
- **मंदोदरी** : स्वजन का निरंतर हित-चिंतन
- **सुतीक्ष्ण मुनि** : निर्मल सौम्य एकाग्र भक्ति
- **कौशल्या** : दूर रहकर भी पुत्र का हित-चिंतन
- **जटायु** : परिणाम से अभय अपनी क्षमता-भर प्रयास
- **विभीषण** : अधर्मी स्वजन की बजाय सद्धर्म का चुनाव

●●●

प्रशान्त अग्रवाल, बरेली

महाभारत के सबक

मत करो

- युधिष्ठिर की तरह जुआ मत खेलो।
- कर्ण की तरह दुष्ट का एहसान मत लो।
- धृतराष्ट्र की तरह पुत्र-मोह में मत पड़ो।
- कुन्ती की तरह अनुचित प्रयोग मत करो।
- द्रौपदी की तरह अनुचित जगह मत हँसो।
- पाण्डु की तरह काम के वशीभूत मत बनो।
- दुर्योधन की तरह अनधिकार हठ मत पालो।
- भीष्म की तरह अनुचित प्रतिज्ञाओं में न बंधो।
- दुःशासन की तरह नारी का अपमान मत करो।
- अश्वत्थामा की तरह अनियंत्रित मत हो जाओ।
- शान्तनु की तरह काम में आसक्त मत हो जाओ।
- गांधारी की तरह नेत्रहीन का अनुसरण मत करो।
- परीक्षित की तरह क्रोध में अनुचित कार्य न करो।
- द्रोणाचार्य की तरह अर्धसत्य पर विश्वास मत करो।
- शल्य जैसे हतोत्साहित करने वाले की संगत में मत रहो।

अवश्य करो

- ✓अभिमन्यु की तरह वीर बनो।
- ✓कृष्ण की तरह धर्म का साथ दो।
- ✓विदुर की तरह स्पष्टवादी शुभचिंतक बनो।
- ✓घटोत्कच की तरह धर्म-कार्य में सहर्ष बलिदान दो।
- ✓अर्जुन की तरह अपनी बागडोर भगवान के हाथों में सौंपो।

● सार-वाक्य ●

"निष्ठा सदैव सत्य-धर्म के प्रति हो, किसी व्यक्ति या पद के प्रति नहीं।"

(विचारक-प्रस्तोता : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

बुद्ध

- ऐसा नक्षत्र जिस पर स्वयं का प्रकाश है। उधार का कुछ नहीं है।
- एक ऐसा व्यक्तित्व जो किसी मार्ग के अनुकरण से नहीं बना, खुद की खोज से बना।
- जिन्होंने अपने अनुयायियों को भी अपने पीछे चलने की बजाय स्वयं-प्रकाश बनने को कहा।
- जिनकी वाणी में किताबी बौद्धिकता नहीं, अपितु खुद के जीवंत अनुभवों का निचोड़ है।
- जिनकी उपस्थिति उपदेशों से अधिक मूल्यवान थी।
- जिनके जीवन में त्याग, वैराग्य, अनासक्ति, सादगी और करुणा उपदेशों से भी अधिक मूर्तिमान रहे।
- जिनकी सीमित वाणी में आप्तता की वह शक्ति निहित है जो साधना की पराकाष्ठा होने पर ही आती है।
- जिन्होंने जनकल्याण के लिए अपने निर्वाण-रूपी परमपद-प्राप्ति को भी स्थगित कर दिया।

- बुद्ध का मार्ग सिर्फ संन्यासियों के लिए ही प्रकाश-स्तम्भ का कार्य नहीं करता, बल्कि हर वह व्यक्ति जो अपने कार्यक्षेत्र में सर्वोत्तम देना चाहता है, उसे बुद्ध से बहुत कुछ प्राप्त होता है।
    - अपमानित होने पर भी अविचलित रहकर सामने वाले को गलती का सहज बोध कराना।
    - जैसे दुर्दांत डाकू के आगे 'निर्भय' होकर जाना और अपनी 'शांतचित्त' 'सौम्य वाणी' से उसका कायाकल्प कर देना।
    - कोई भी किताबी आदर्श उपस्थित न होने के बावजूद 'अपना रास्ता खुद खोजना' और किसी के भी साथ न देने पर भी उस रास्ते पर 'अकेले दम पर दृढ़तापूर्वक चलना'।

ज्ञान तो प्रायः सभी को है, ढेर सारा है किंतु वह प्रायः केवल बुद्धि तक ही सीमित रह जाता है, उल्टे अहंकार का कारण बन जाता है लेकिन बुद्ध का ज्ञान हृदय तक उतरा, उनके आचरण में दिखा, उनकी वाणी में ओज बनकर फूटा।

इसीलिए शुष्क किताबी उपदेशक जहाँ जुगनू की भाँति निष्प्रभावी रह जाते हैं वहीं बुद्ध जैसे 'स्वयंप्रकाश सूर्य' सहस्रों वर्षों के बाद भी लोगों को

- ज्ञान का प्रकाश पहुंचाते हैं,
- सार्थक जीवन का मार्ग सुझाते हैं
- सत्य का बोध कराते हैं
- यही नहीं,
- अवतारवाद के विरोधी होने के बावजूद अपने उदात्त और अपूर्व व्यक्तित्व के बल पर अवतार मान लिए जाते हैं।

बुद्ध का अनुयायी नहीं बनना है,
उनके प्रकाश में हमें अपना-अपना बुद्धत्व प्राप्त करना है।

(विचारक : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उत्तर प्रदेश)

गूढ़ मार्मिक प्रसंग

सूरदास द्वारा भगवद्दर्शन हेतु आँखें माँगने पर गर्ग मुनि कहते हैं, चर्म-चक्षु मिलने पर संसार की माया आपको भटका सकती है और अब तक हो रहा भगवद्दर्शन भंग हो सकता है, तब सूरदास कहते हैं कि आज पता लगा कि नेत्रहीन शरीर देकर भगवान ने मुझ पर कितनी कृपा की है।

नारद द्वारा वसुदेव-देवकी की चिंता करने पर भगवान पूछते हैं कि अब तक उनकी रक्षा किसने की? और जब नारद कहते हैं, 'आपने की', तब भगवान कहते हैं कि उन्हें हमारी तो कभी आवश्यकता ही नहीं पड़ी, उनकी रक्षा उनके धर्म(पालन) ने की।

राम (बाली से), "सत्पुरुषों का धर्म अतिसूक्ष्म होता है, जिसे समझना बहुत कठिन है। बस इतना समझ लो कि यदि राजा पापी को दण्ड दे, तो पापी उस दंड को भोगकर निष्पाप हो जाता है। और यदि राजा पापी को दण्ड न दे, तो उस पाप का फल राजा को भोगना पड़ता है।"

रावण : श्री मत कहो उसे (श्रीराम को)!
कुम्भकर्ण : भैया, आँख बंद कर लेने से सूर्य का प्रकाश लुप्त नहीं हो जाता....जो तीनों लोकों के स्वामी हों, स्वयं श्रीमन्नारायण हों तो उन्हें श्रीराम ही कहा जाएगा....

प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली

मार्मिक बात

(गोकुलवास के वे चार नियम, जिनका श्रीकृष्ण ने पालन किया)

1. गोकुलवास के दौरान श्रीकृष्ण ने कभी जूते नहीं पहने। वे कहते थे कि मेरी गैयाँ कब जूते पहनती हैं, जो मैं पहनूँ। मैं तो गायों का सेवक हूँ।

2. गोकुलवास के दौरान श्रीकृष्ण ने कभी भी सिले हुए कपड़े नहीं पहने। वे कहते थे कि जब मेरे गरीब साथी ग्वाल सिले कपड़े नहीं पहनते तो मैं भी नहीं पहनूँगा।

3. गोकुलवास के दौरान श्रीकृष्ण ने कभी केश नहीं कटाये, क्योंकि मानते हैं कि अनेक ऋषि-मुनि आदि उनके निरंतर संस्पर्श की इच्छा से उनके केशों के रूप में अवतरित हुए थे।

4. गोकुलवास के दौरान श्रीकृष्ण ने कभी कोई शस्त्र नहीं उठाया क्योंकि व्रजभूमि प्रेम की भूमि है। श्रीकृष्ण ने बाँसुरी से घायल किया, नयनों से घायल किया, लीलाओं से घायल किया। जिन्हें मारा भी, उन्हें भी तार दिया।

~ मार्मिक प्रसंग ~
"चैतन्य महाप्रभु और गीतापाठी भावुक ब्राह्मण"

एक बार चैतन्य महाप्रभु ने देखा कि एक ब्राह्मण बड़े ही प्रेमपूर्वक, गद्गद कण्ठ से गीता का पाठ कर रहा है, उसका सम्पूर्ण शरीर रोमांचित था, चक्षुओं से जल बह रहा था किन्तु वह श्लोकों का अशुद्ध उच्चारण कर रहा था। जब उसका पाठ पूर्ण हो गया तो चैतन्य महाप्रभु ने उससे पूछा कि उसे इस पाठ में ऐसा क्या आनन्द मिलता है जिसके कारण पाठ करते समय उसकी ऐसी दशा हो जाती है।

ब्राह्मण बोला, "हे प्रभु! मैं निरक्षर और मूर्ख ब्राह्मण हूँ। मेरे गुरूदेव ने मुझे गीता का नित्य पाठ करने का आदेश दिया था। मुझे गीता के अर्थ का ज्ञान नहीं है। मैं जब पाठ करता हूँ तो इस बात का ध्यान करता हूँ कि सफेद रंग के घोड़ों से जुता हुआ एक बहुत सुन्दर रथ खड़ा है। उसकी ध्वजा पर हनुमानजी विराजमान हैं। रथ में अर्जुन शोक के भाव से धनुष को नीचे रखकर बैठा हुआ है। भगवान् कृष्ण सारथी की जगह बैठकर मुस्कुराते हुए अर्जुन को गीता का उपदेश कर रहे हैं। भगवान की इसी रूपमाधुरी का पान करते-करते मैं अपने आप को भूल जाता हूँ।

आरम्भ में लोग मेरा पाठ सुनकर हँसते थे और मुझे बुरा-भला भी कहते थे। अब वह क्या कहते हैं, इस बात का मुझे ज्ञान नहीं है क्योंकि मुझे इस पाठ में इतना रस आने लगा है कि मैं संसार को एकदम भूल जाता हूँ।"

ब्राह्मण की बातें सुनकर महाप्रभु मुस्कुराते हुए बड़े ही विनम्र स्वर में बोले, "तुम धन्य हो ब्राह्मण, गीता का असली अर्थ तो तुमने ही समझा है। भगवान शुद्ध अथवा अशुद्ध पाठ करने से प्रसन्न अथवा अप्रसन्न नहीं होते। वे तो भाव के भूखे हैं।"

चैतन्य महाप्रभु के ऐसे वचन सुनकर ब्राह्मण अत्यन्त प्रसन्न हुआ।

~ मार्मिक प्रसंग ~

(अशोक वाटिका में हनुमान से संदेशा पाकर)

सीताजी (व्यथित होकर) : मुझे तो अब भी विश्वास नहीं होता कि मेरे स्वामी का संदेशा लेकर कोई सचमुच मेरे पास आया है, मुझे भय लग रहा है कि कहीं मेरी नींद खुल जाये और मुझे पता लगे कि मैं एक स्वप्न देख रही थी। हे कपिश्रेष्ठ! क्या मेरे स्वामी भी मुझे इतना ही याद करते हैं जितना कि मैं उन्हें करती हूँ?

हनुमान : मुझे क्षमा करना माता, प्रभु श्रीराम का प्रेम आपसे कहीं अधिक है। उसे कोई देख नहीं सकता। आप तो किसी राक्षसी से अपने मन की बात कह सकती हैं, परंतु प्रभु की विवशता देखो, वो तो किसी से अपने हृदय की बात कह भी नहीं सकते। ...उनकी व्यथा कौन समझ सकता है? ...आते समय बस इतना कहा कि हनुमान सीता से कहना कि तुम्हारे जाने के बाद मेरी देह प्राणविहीन हो गयी है। बस, फिर ऐसा लगा कि उन्होंने मूक भाषा में आपके लिए बहुत कुछ कहा, जो शायद आप ही सुन सकती हैं।

सीता : हाँ, मैं सुन सकती हूँ, मैं सुन रही हूँ हनुमान...

स्रोत : 'रामायण' धारावाहिक (रामानंद सागर जी)

क्यों.....?

पेड़ से सेब गिरा। न्यूटन ने सोचा, "नीचे ही क्यों गिरा?" साधारण बुद्धि मानव हँसे होंगे, "अरे, हर चीज नीचे ही तो गिरती है, इसमें 'क्यों' का क्या मतलब?"

लेकिन न्यूटन गहराई में गया और गुरुत्वाकर्षण सिद्धांत के रूप में 'क्यों' का उत्तर ढूँढ़ निकाला।

क्या सिर्फ धरती ही चीजों को अपनी ओर खींचती है?

नहीं, हमारे कर्मों का गुरुत्वाकर्षण घटनाओं को भी अपनी ओर खींचता है।

मैं सड़क पर दुर्घटना का शिकार हुआ जबकि मेरी कोई गलती नहीं थी, क्यों? साधारण बुद्धि मानव फिर हँसे, "अरे, कभी-कभी हो ही जाता है", लेकिन वैज्ञानिक बुद्धि बोली, "अकारण कुछ नहीं होता।" संभव है कि भूतकाल में मैंने कभी कोई ईंट का टुकड़ा बीच सड़क पर छोड़ा हो, जिससे बाद में कोई दुर्घटनाग्रस्त हो गया हो।

समान-कर्म के बावजूद एक को लाभ होता है, दूसरे को नुकसान, क्यों? 'यूं ही' नहीं, ज़रूर पिछला बोया कोई बीज फलित हुआ होगा। कर्म की गति बड़ी गहन है।

आइंस्टीन से पूछा गया कि आपको सर्वोच्च सत्ता में विश्वास क्यों है? आइंस्टीन बोले, "जब मैंने देखा कि nucleus के चारों ओर electron भी बिल्कुल systematically move कर रहे हैं, तो मुझे लगा कि कोई तो है जो सृष्टि को बिल्कुल नियमबद्ध रूप से चला रहा है।"

आप इसे वैज्ञानिकता कहें, धार्मिकता कहें या आस्तिकता, बात एक ही है।

और कर्म से भी अधिक शक्तिशाली है विचार की अदृश्य सत्ता

लेकिन कैसे? आइए, समझते हैं,

Solid मिर्च दिखती है, तीखी होती है

Liquid soup में वह दिखती कम है, पर तीखापन बढ़ जाता है

लेकिन आग में डालने पर उसकी Gas अदृश्य, पर तीखापन सर्वाधिक हो जाता है।

कहने का अर्थ यही है कि जितना अदृश्य, जितना सूक्ष्म, उतना ही अधिक शक्तिशाली।

दूध दिखता है, लेकिन उसमें निहित मक्खन/घी अदृश्य हैं।

सृष्टि दिखती है, सृष्टा अदृश्य है।

कार्य दिखता है, विचार/मनोभाव अदृश्य हैं।

इसी प्रकार जीवन में घटनाएँ तो दिखती हैं, लेकिन कई बार अदृश्य कारण समझ नहीं आता; और तब मानना चाहिए कि घटना तो सिर्फ फल है, चिंतन हो उस अदृश्य बीज का, जो हम जाने-अनजाने बो रहे हैं, अपने कर्म द्वारा या अपने विचार द्वारा।

स्वामी विवेकानंद ने अपनी पुस्तक राजयोग में कहा है, "यदि आप किसी पत्थर को आकाश में फेंकते हैं और यदि उस पर कोई भी बल (force) कार्य न करे तो वह पत्थर आपके हाथ के ठीक उसी बिंदु पर लौटकर ज़रूर आयेगा, समय चाहे कितना भी लगे, क्योंकि इस सृष्टि में हर वस्तु, कर्म, विचार, भावना की गति वृत्ताकार/वलयाकार है।"

(इस संदर्भ में Rhonda Byrne की पुस्तक 'The Secret' में उल्लिखित 'Law of Attraction' भी पढ़ने योग्य है।)

(निष्कर्ष)

जो प्रक्षेपित किया जायेगा, वही हम पर घूमकर वापस आयेगा। कोई देखे या न देखे, कर्तव्य में लापरवाही करना, कमज़ोरों का हक़ मारना, किसी को नाहक़ सताना, 'यूँ ही' परनिंदा का आनंद लेना आदि अनेकानेक अपकर्मों से जहाँ हम लोग अपने भावी अमंगल की पटकथा स्वयं लिखते हैं, वहीं बुद्धिमान लोग सत्कर्मों के बीज बोकर मंगल-भविष्य की नींव रखते हैं। यहाँ तक कि सूक्ष्म की शक्ति से परिचित लोग तो किसी के प्रति द्वेष भावना भी नहीं रखते और सभी के प्रति सद्भावनाएँ रखते हैं क्योंकि कर्म और विचार के यही बीज भविष्य में फल बनकर हमारे सुख-दुःख को तय करेंगे। (विचारक : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

भोजन विज्ञान

श्वेतकेतु के दृष्टांत में एक बहुत उपयोगी बात पढ़ी, जो धर्म में निहित विज्ञान को भी बड़ी आसानी से सिद्ध कर देती है :-

संसार की प्रत्येक वस्तु के तीन घटक हैं : अन्न, जल, तेज।

उदाहरण हेतु :- अग्नि की लाली तेज से, सफेदी जल से, कालिमा अन्न से।

(विशेष बात)

अन्न, जल और तेज; इन तीनों से तीन-तीन भाग बनते हैं।

स्थूल भाग, मध्यम भाग, सूक्ष्म (सार) भाग

1. अन्न का स्थूल भाग मल, मध्यम भाग मांस, सूक्ष्म भाग मन
2. जल का स्थूल भाग मूत्र, मध्यम भाग रक्त, सूक्ष्म भाग प्राण
3. तेज का स्थूल भाग हड्डी, मध्यम भाग मज्जा, सूक्ष्म भाग वाणी

(मेरा विचार)

भौतिकवादी स्थूल चीजों पर ध्यान देता है लेकिन
अध्यात्मवादी सूक्ष्म की अदृश्य शक्ति से परिचित होता है।

- भौतिकवादी भोजन के स्थूल और मध्यम भागों अर्थात मांस, मज्जा, हड्डी, रक्त की पुष्टता को स्वास्थ्य का आधार-स्तम्भ मानता है लेकिन अध्यात्मवादी भोज्य पदार्थों की सात्त्विकता पर ध्यान देता है ताकि उनके सूक्ष्म और सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तत्त्व मन, प्राण और वाणी स्वस्थ रहें।

- हमारी संस्कृति में भोजन की गुणवत्ता में स्थूल घटकों से भी अधिक महत्त्व सूक्ष्म बातों को दिया जाता है :-
  1. भोजन कैसी कमाई से आया है ?
  2. किस भावना से बनाया और परोसा गया है ?
  3. भगवान का भोग लगाकर भोजन को प्रसाद मानने की भावना।
  4. अन्यों का हिस्सा निकालकर, फिर खाने की परंपरा आदि

- कहावतों और बोलचाल में भी हम कहते हैं :-
  1. जैसा अन्न वैसा मन
  2. जल ही जीवन (प्राण) है।
  3. उसकी वाणी में कितना तेज है!

स्पष्ट है कि हमारे लोकजीवन में, परम्पराओं में वैज्ञानिक आध्यात्मिकता की जड़ें कितनी गहरी हैं। (विचारक : प्रशान्त अग्रवाल, प्रा. वि. डहिया, बरेली, उत्तर प्रदेश)

तिथि अनुसार पर्व/दिवस

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली)

1	चैत्र शुक्ल 1	नवसंवत्सर	31	कार्तिक कृ० 4	करवा चौथ
2	चैत्र शु० 1-9	वासंतिक नवरात्र	32	कार्तिक कृ० 8	अहोई अष्टमी
3	चैत्र शु० 9	रामनवमी	33	कार्तिक कृ० 12	गोवत्स द्वादशी
4	चैत्र पूर्णिमा	हनुमान जयन्ती	34	कार्तिक कृ० 13	धनतेरस
5	वैशाख शु० 3	अक्षय तृतीया परशुराम जयन्ती	35	कार्तिक कृ० 14	नरक चतुर्दशी
			36	कार्तिक अमावस्या	दीपावली
6	वैशाख शु० 9	सीतानवमी	37	कार्तिक शु० 1	गोवर्धन पूजा (अन्नकूट)
7	वैशाख शु० 14	नृसिंह चतुर्दशी	38	कार्तिक शु० 2	यम द्वितीया (भैया दूज)
8	ज्येष्ठ अमावस्या	वटसावित्री व्रत	39	कार्तिक शु० 6	सूर्य षष्ठी (छठ)
9	ज्येष्ठ शु० 10	गंगा दशहरा	40	कार्तिक शु० 8	गोपाष्टमी
10	ज्येष्ठ शु० 11	निर्जला एकादशी	41	कार्तिक शु० 9	अक्षय नवमी
11	आषाढ़ शु० 2	रथयात्रा	42	कार्तिक शु० 11	देवोत्थान एकादशी
12	आषाढ़ शु० 11	देवशयनी एकादशी			तुलसी विवाह
13	आषाढ़ पूर्णिमा	गुरु पूर्णिमा	43	कार्तिक शु० 14	वैकुण्ठ चतुर्दशी
14	श्रावण शु० 3	तीज	44	कार्तिक पूर्णिमा	गंगा स्नान
15	श्रावण शु० 5	नागपंचमी	45	मार्गशीर्ष कृ० 8	कालभैरवाष्टमी
16	श्रावण पूर्णिमा	रक्षाबन्धन	46	मार्गशीर्ष शु० 5	विवाह पंचमी
17	भाद्रपद कृ० 8	श्रीकृष्णजन्माष्टमी	47	मार्गशीर्ष शु० 11	गीता जयन्ती
18	भाद्रपद कृ० 12	गोवत्स द्वादशी	48	मार्गशीर्ष पूर्णिमा	दत्तात्रेय जयन्ती
19	भाद्रपद अमावस्या	सतियों की मावस	49	माघ कृ० 4	गणेश चतुर्थी (सकट)
20	भाद्रपद शु० 3	हरितालिका तीज	50	सूर्य स्थिति से	मकर संक्रान्ति
21	भाद्रपद शु० 4	गणेश चतुर्थी	51	माघ कृ० 11	षट्तिला एकादशी
22	भाद्रपद शु० 5	ऋषि पंचमी	52	माघ अमावस्या	मौनी अमावस्या
23	भाद्रपद शु० 8	श्रीराधाष्टमी	53	माघ शु० 5	वसन्त पंचमी
24	भाद्रपद शु० 12	वामन जयन्ती	54	माघ शु० 7	अचला सप्तमी
25	भाद्रपद शु० 14	अनन्त चतुर्दशी	55	माघ शु० 8	भीष्म अष्टमी
26	आश्विन कृ० 1-15	पितृपक्ष (श्राद्ध)	56	माघ पूर्णिमा	माघी पूर्णिमा
27	आश्विन अमावस्या	पितृविसर्जनी अमावस्या	57	फाल्गुन कृ० 14	महाशिवरात्रि
28	आश्विन शु० 1-9	शारदीय नवरात्र	58	फाल्गुन पूर्णिमा	होली
29	आश्विन शु० 10	विजयादशमी	59	चैत्र कृ० 1	धुलेंडी
30	आश्विन पूर्णिमा	शरद पूर्णिमा	60	चैत्र कृ० 1-15	गणगौर महोत्सव

गीता में भगवान की विभूतियाँ

(स्रोत : गीता, अध्याय 10, विभूतियोग)

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली)

भगवान कहते हैं : मैं हूँ...

1	इंद्रियों में	मन	28	सिद्धों में	कपिल मुनि
2	शब्दों में	ओंकार	29	मुनियों में	वेदव्यास
3	यज्ञों में	जपयज्ञ	30	महर्षियों में	भृगु
4	वृक्षों में	पीपल	31	देवर्षियों में	नारद
5	मनुष्यों में	राजा	32	पुरोहितों में	बृहस्पति
6	शस्त्रों में	वज्र	33	यक्ष-राक्षसों में	कुबेर
7	पितरों में	अर्यमा	34	ज्योतियों में	सूर्य
8	दैत्यों में	प्रह्लाद	35	विद्याओं में	अध्यात्म विद्या
9	नदियों में	गंगा	36	सबके हृदय में	आत्मा
10	अक्षरों में	अकार	37	भूतप्राणियों में	चेतना
11	समासों में	द्वन्द्व	38	आठ वसुओं में	अग्नि
12	छंदों में	गायत्री	39	एकादश रुद्रों में	शंकर
13	कवियों में	शुक्राचार्य	40	द्वादश आदित्यों में	विष्णु
14	महीनों में	मार्गशीर्ष	41	सेनापतियों में	स्कन्द
15	ऋतुओं में	वसन्त	42	शस्त्रधारियों में	राम
16	जलाशयों में	समुद्र	43	वृष्णिवंशियों में	वासुदेव (कृष्ण)
17	घोड़ों में	उच्चै:श्रवा	44	पाण्डवों में	धनंजय (अर्जुन)
18	हाथियों में	ऐरावत	45	स्थिर रहने वालों में	हिमालय पहाड़
19	गौओं में	कामधेनु	46	छल करने वालों में	जुआ
20	सर्पों में	वासुकि	47	पवित्र करने वालों में	वायु
21	नागों में	शेषनाग	48	शिखरवाले पर्वतों में	सुमेरु
22	पशुओं में	सिंह	49	शासन करने वालों में	यमराज
23	पक्षियों में	गरुड़	50	संतानोत्पत्ति के हेतुओं में	कामदेव
24	मछलियों में	मगर	51	गणना करने वालों का	समय
25	वेदों में	सामवेद	52	उनचास मरुद्गणों का	तेज
26	देवों में	इन्द्र	53	जलचरों का अधिपति	वरुण
27	गंधर्वों में	चित्ररथ	54	नक्षत्रों का अधिपति	चन्द्रमा

नामों के निहितार्थ

(संकलन- संयोजन)
प्रशान्त अग्रवाल, बरेली

द्रौपदी : द्रुपद की पुत्री
पार्वती : पर्वत की पुत्री
आरुणि : अरुण ऋषि के पुत्र
भीष्म : भीषण प्रतिज्ञा करने से
वासुदेव : वसुदेव के पुत्र (कृष्ण)
कैकेयी : कैकय महाराज की पुत्री
जानकी : जनक की पुत्री (सीता)
वैदेही : विदेहराज की पुत्री (सीता)
पांचाली : पांचाल देश की (द्रौपदी)
सत्यकाम जाबाल : जबाला का पुत्र
जाह्नवी : जह्नु ऋषि से उत्पन्न (गंगा)
भागीरथी : भगीरथ के लाने से (गंगा)
वेद व्यास : वेदों का विभाग करने से
गोपाल : गाय को पालने वाले (कृष्ण)
अनंग : शापवश अंगहीन होने से (कामदेव)
गया क्षेत्र : परमभक्त 'गय असुर' के नाम पर
पृथा : पृथु की पुत्री (कुंती)
पार्थ : पृथा (कुंती) के पुत्र (कौन्तेय/अर्जुन)
पार्थसारथी : पार्थ (अर्जुन) के सारथी (कृष्ण)
विष्णुपदी : विष्णु-चरण से निकलने से (गंगा)
आशुतोष : जल्दी (आशु) तुष्ट होने वाले (शिव)
कृष्ण द्वैपायन : श्याम शरीर और द्वीप में जन्म
याज्ञसेनी : याज द्वारा किये यज्ञ से उत्पन्न (द्रौपदी)
नीलकण्ठ : विष के कारण नीले कण्ठ वाले (शिव)
अपर्णा : तप में पर्ण (पत्ते) खाने भी छोड़े (पार्वती)
हनुमान : वज्र-प्रहार से हनु (ठोड़ी) चोटिल होने से
मधुसूदन : मधु नामक दैत्य को मारने वाले (विष्णु)
अष्टावक्र : आठ स्थानों से शरीर टेढ़ा (वक्र) होने से
गंगाधर : गंगा को जटाओं में धारण करने वाले (शिव)
गजानन : हाथी (गज) के मुख (आनन) वाले (गणेश)
हृषीकेश : हृषीक (ज्ञानेन्द्रिय) के स्वामी (विष्णु/कृष्ण)
गुडाकेश : गुडाका (निद्रा) के ईश / निद्राजयी (अर्जुन)
गिरिधारी : गिरि (गोवर्द्धन) को धारण करने वाले (कृष्ण)
सव्यसाची : बायें हाथ से भी (बाण चलाने में) कुशल (अर्जुन)
रणछोड़ : जरासंध के सामने रण (युद्ध) छोड़कर जाने वाले (कृष्ण)
दामोदर : ऊखल लीला में दाम (रस्सी) उदर (पेट) पर बंधने से (कृष्ण)
वाल्मीकि : जप के दौरान दीमकों की बाँबी (वल्मीक) से ढक जाने से

***

("राम" के चयनित नाम)

सौम्य
राघव
महादेव
अद्भुत
सनातन
शाश्वत
जनार्दन
सत्यव्रत

("शिव" के चयनित नाम)

अनन्त
सोम
सदाशिव
तारक
पिनाकी
श्रीकंठ
सर्वज्ञ
वीरभद्र
मृत्युंजय
सात्त्विक
शाश्वत
महादेव
भीम
अनघ
देव

(विष्णुसहस्रनाम से चयनित नाम)

सुव्रत
अनय
नहुष
वत्सल
देवेश
जय
मुकुन्द
नंदन
गहन
अजित
आदित्य
सुधन्वा
शुभांग
श्रीवास
श्रीनिवास
श्रीपति
श्रीश
श्रीधर
श्रेय
विशोक
अनंत
वासुदेव
माधव
हेमांग
वरांग
अचल
धन्य

निग्रह
सुन्दर
जयन्त
पावन
सर्वज्ञ
सिद्ध
योगी
योगीश
सात्त्विक
सत्य
रवि
सूर्य
कपिल
शिशिर
दक्ष
संत
जीवन
अनंतश्री
सुवीर
भीम
प्रणव
गदाधर
वरुण
सोम
वीर
ब्रह्म
शान्त

अक्षर
अर्चित
मनोहर
आनंद
सुघोष
सुदर्शन
ध्रुव
वर्धन
नारायण
अनुकूल
राम
कृष्ण
शिव
माधव
ऊर्जित
सम्भव
भावन
केशव
रुद्र
अमृत
महातपा
पद्मनाभ
विजय
अच्युत
श्रेष्ठ
ईशान
शाश्वत

मेधावी
विक्रम
सम्मित
दामोदर
रोहित
अतुल
महीधर
पवन
भानु
साधु
विष्णु
वर्धमान
महेन्द्र
अशोक
जनेश्वर
इष्ट
प्राण
स्कंद
सर्वज्ञ

(उक्त में मेरी पसंद)

अनन्त
ध्रुव
सौम्य
राघव
शाश्वत
देव
सात्त्विक
श्रीकंठ
सोम
तारक
सुव्रत
केशव
जयन्त
विक्रम
अमृत
ईशान
प्रणव

धर्म पर आसुरी छाया

- भोजन में नमक और भजन में आवाज़ ज़्यादा हो, तो उनके सारे गुण अर्थहीन हो जाते हैं।
- तेज कर्कश स्वर में तो अच्छी बात भी पसंद नहीं आती क्योंकि तब मनोमस्तिष्क पर शब्द नहीं, कर्कशता ही हावी होती है।
- अपने घर में बैठकर हम क्या सुनें, कब सुनें, कैसे सुनें; यह हम तय करेंगे या कोई बाहर वाला?
- अपने मन का काम भी आराम होता है और दूसरे के मन का आराम भी काम होता है।
- हर व्यक्ति की रुचि और परिस्थिति अलग-अलग हो सकती है और सच्चा धर्म इस भिन्नता का आदर करता है, हरेक को अपने-अपने तरीके से पूजा-पाठ की छूट देता है, किसी पर 'जबरन' कुछ नहीं थोपता।
- जो किसी निरपराध को पीड़ा दे, वह धर्म नहीं, अधर्म है।

  अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम् |
  परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम् ||
- गीता में दान, भोजन आदि प्रत्येक कर्म की तीन श्रेणियाँ बतायी गयी हैं, सात्त्विक, राजसिक, तामसिक; तेज कर्कश यांत्रिक स्वर में भजन इनमें से निश्चित ही तामसिक की श्रेणी में आयेगा।
- लाउडस्पीकर में एक प्रकार की कर्कश गूँज होती है, आखिर उसका नाम ही 'loud' स्पीकर है।
- यदि तेज स्वर को साधने के लिए खिड़की-दरवाज़े बन्द करने पड़ें, आवाज़ को काटने के लिए जाड़े में भी पंखा चलाना पड़े, कानों को कसकर दबाना पड़े, तो ऐसा स्वर धर्म कहलाएगा या ज़ुल्म?
- क्या इन लाउडस्पीकरों को बजाने वाले जानते हैं कि
  - सुबह-दोपहर- शाम के राग तक अलग-अलग होते हैं।
  - स्थूल की अपेक्षा सूक्ष्म अधिक प्रभावी होता है।
  - भगवान तो चींटी के पैरों की आवाज़ भी सुन लेते हैं।
- क्या प्राचीन काल के महान भगवद्भक्त लाउडस्पीकरों के दास थे?
- वास्तव में कर्कश यांत्रिक शोर एक कुरीति है, प्रत्येक धर्म/सम्प्रदाय पर कलंक है।

[पीड़ित निवेदक : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.]